B.A Hons Paper I Part I

27/01/2022

सामाजिक स्तरीकरण (Social Stratification)

सामाजिक स्तरीकरण एक व्यवस्था है जो समाज को विभिन्न स्तरों में विभक्त करके सामाजिक जीवन को व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न करती है। सामाजिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक समूह को एक विशेष स्तर प्रदान करके समाज को व्यवस्थित बनाने का प्रयत्न सदैव से ही होता रहा है। सामाजिक स्तरीकरण का उद्देश्य समाज में प्रत्येक व्यक्ति की बुद्धि, योग्यता, कार्यक्षमता, और पारिवारिक शक्ति के अनुसार उनकी स्थिति और कार्यों का निर्धारण करके सामाजिक व्यवस्था को सुदृढ़ करना होता है। सामाजिक स्तरीकरण हलांकि सभी समाजों की एक अनिवार्य विशेषता है लेकिन विभिन्न समाजों में इसका रूप भिन्न-भिन्न हो सकता है। कुछ समाजों में यह भिन्नता जन्म के आधार पर होती है, जबकि कुछ समाजों में इसका निर्धारण व्यक्तियों की कुशलता और योग्यता के आधार पर किया जाता है। विभिन्न विद्वानों ने सामाजिक स्तरीकरण को समझने के लिए इसे इस प्रकार स्पष्ट किया है:—

सदरलैण्ड एवं वुडवर्ड (Sutherland and Woodward) ने Introductory sociology में सामाजिक स्तरीकरण को परिभाषित करते हुए लिखा है कि "स्तरीकरण केवल अन्तर्क्रियाओं अथवा विभेदीकरण (differentiation) की ही

एक प्रक्रिया है जिसमें कुछ व्यक्तियों को दूसरे व्यक्तियों की तुलना में उच्च स्थिति प्राप्त होती है।"

मरे (R. Murray) ने सामाजिक स्तरीकरण को स्पष्ट करते हुए कहा है कि "स्तरीकरण समाज का वह क्रमबद्ध विभाजन है जिसमें सम्पूर्ण समाज को कुछ उच्च अथवा निम्न सामाजिक इकाइयों में विभक्त कर दिया गया है।" इस परिभाषा से स्पष्ट होता है कि सामाजिक स्तरीकरण के रूप एक सीढ़ी के समान है जिसमें कुछ समूह ऊपर होते हैं और कुछ उसकी तुलना में नीचे।

जिसबर्ट (Gisbert) के अनुसार "सामाजिक स्तरीकरण का अर्थ समाज को कुछ ऐसे स्थायी समूहों और श्रेणियों में विभक्त कर देने वाली व्यवस्था से है जिसके अन्तर्गत सभी समूह और श्रेणियाँ उच्चता तथा अधीनता के सम्बन्धों द्वारा एक दूसरे से बंधी हैं।"

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह निष्कर्ष निकलता है कि सामाजिक स्तरीकरण वह प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत कुछ सामाजिक मूल्यों अथवा नियमों के अनुसार समाज अनेक उच्च और निम्न समूहों

में विभक्त हो जाता है। यह समूह एक दूसरे से पूर्णतया पृथक न रहकर कार्यात्मक रूप से एक दूसरे के सहयोगी होते हैं तथा अपने-अपने कार्यों द्वारा सामाजिक व्यवस्था को हृद बनाने में योगदान देते हैं। उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर सामाजिक स्तरीकरण की कुछ विशेषताएँ भी स्पष्ट होती हैं जो निम्नलिखित हैं :-

(i) सामाजिक स्तरीकरण के फलस्वरूप समाज में सामाजिक असमानता देखने को मिलती है।

(ii) सामाजिक स्तरीकरण का रूप विभिन्न समाजों में भिन्न-भिन्न हो सकता है।

(iii) सामाजिक स्तरण के विभिन्न आधारों पर समाज में श्रेणी तथा स्तर का निर्माण होता है।

(iv) विभिन्न श्रेणियों तथा स्तरों के पारस्परिक सम्बन्धों के बीच एक प्रकार के क्रमबद्ध सामाजिक असमानता दिखाई पड़ती है। इस प्रकार से उच्च वर्ग में आ सकता है। ठीक इसके विपरीत एक उच्च स्तर का व्यक्ति किसी खास कारणों से निम्न स्तर पर आ सकता है। इस प्रकार वर्ग व्यवस्था सामाजिक स्तरीकरण की लचीली व्यवस्था है।

उपरोक्त विवरणों से यह स्पष्ट है कि सामाजिक स्तरीकरण के बहुत सारे आधार हैं और

के अलग-अलग ढंग से व्यक्तियों
की सामाजिक स्थिति का निर्धारण
करते है। प्रत्येक समाज अपनी
आवश्यकताओं, सामाजिक मूल्यों
और परिस्थितियों के अनुसार इनमें
से एक आधार मानकर सामाजिक
स्तरीकरण की व्यवस्था को निश्चित
रूप देता है। प्राचीन काल
में भारत के सामाजिक स्तरीकरण का
आधार वर्ण एवं बाद में जाति हुई
परन्तु आज जाति एवं वर्ग दोनों
ही सामाजिक स्तरीकरण का मुख्य
आधार है।

DR Vijant Kumar Mishra
Assistant Professor
Guest Faculty (Part time)
Dept of Sociology
B.A Hons Part I Paper I
Date - 27/01/2022